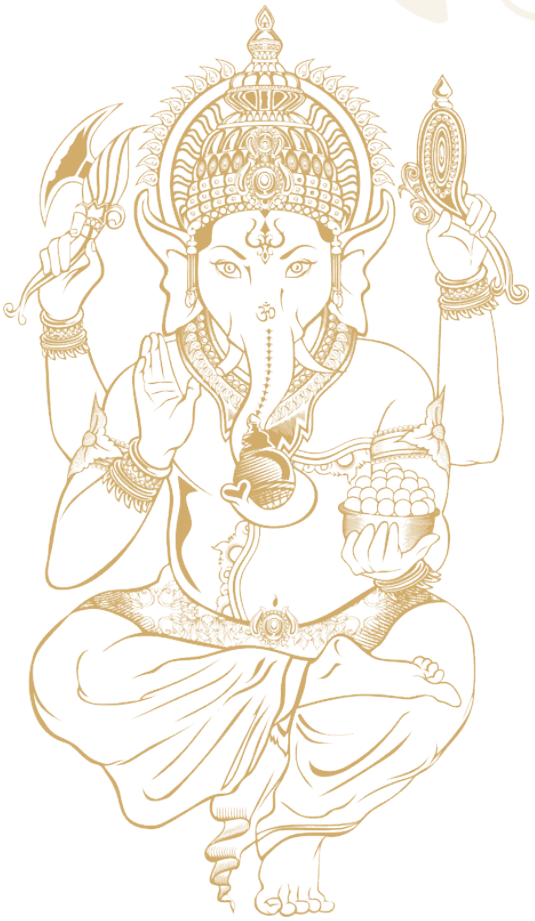

KAKA AMIT GHAMTA

10 Sep 2025

04:10 AM

Rohru

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119417201**

तिथि 10/09/2025 **समय** 04:10:00 **वार** बुधवार **स्थान** Rohru **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:01
अक्षांश 31:12:00 उत्तर **रेखांश** 77:45:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:00 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	03:07:55 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:03:01 घं	योनि	गज
सूर्योदय	05:59:41 घं	नाड़ी	अन्त्य
सूर्यास्त	18:32:19 घं	वर्ण	विप्र
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	जलचर
शक संवत	1947	वर्ग	सर्प
मास	आश्विन	युँजा	पूर्व
पक्ष	कृष्ण	हंसक	जल
तिथि	3	जन्म नामाक्षर	दो-दौलत
नक्षत्र	रेवती	पाया(रा.-न.)	रजत-स्वर्ण
योग	वृद्धि	होरा	चंद्र
करण	वणिज	चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी		योगिनी	
बुध 9वर्ष 2मा 19दि		उल्का 3वर्ष 3मा 1दि	
बुध		उल्का	
10/09/2025		10/09/2025	
29/11/2034		11/12/2028	
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		10/09/2025
	00/00/0000	संकटा	12/06/2026
	10/09/2025	मंगला	12/08/2026
चन्द्र	31/05/2026	पिंगला	12/12/2026
मंगल	28/05/2027	धान्या	12/06/2027
राहु	14/12/2029	भ्रामरी	11/02/2028
गुरु	21/03/2032	भद्रिका	11/12/2028
शनि	29/11/2034		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			28:58:23	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	शनि	---	0:00			
सूर्य			23:16:58	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	शनि	स्वराशि	1.36	मातृ	पितृ	विपत
चंद्र			22:46:06	मीन	रेवती	2	बुध	चंद्र	सम राशि	1.02	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			27:32:42	कन्या	चित्रा	2	मंगल	गुरु	शत्रु राशि	1.27	आत्मा	भ्रातृ	साधक
बुध		अ	20:02:50	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	राहु	मित्र राशि	1.04	ज्ञाति	ज्ञाति	विपत
गुरु			25:11:54	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	शत्रु राशि	1.28	अमात्य	धन	मित्र
शुक्र			24:07:40	कर्क	आश्लेषा	3	बुध	राहु	शत्रु राशि	1.22	भ्रातृ	कलत्र	जन्म
शनि	व		05:09:33	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	0.96	कलत्र	आयु	अतिमित्र
राहु	व		24:07:05	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		24:07:05	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

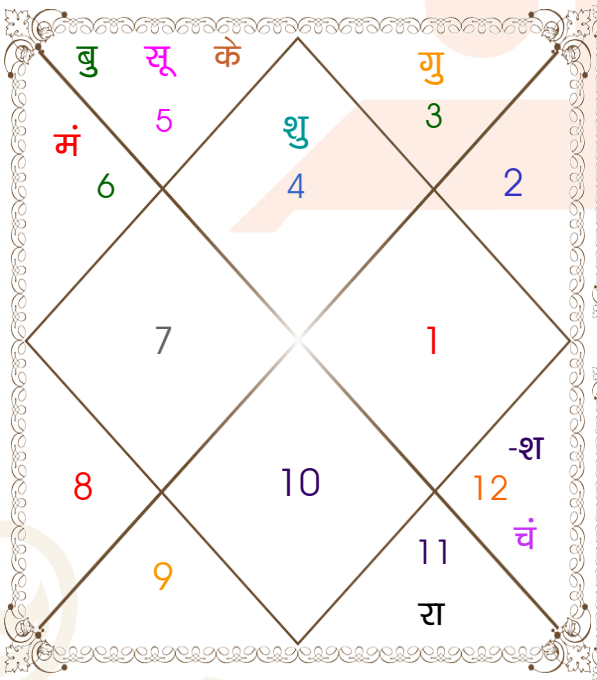

चन्द्र कुंडली

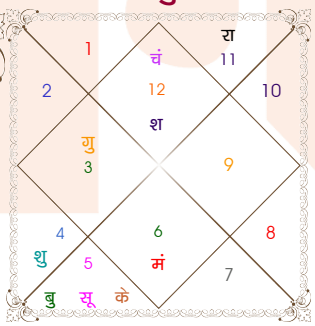

नवमांश कुंडली

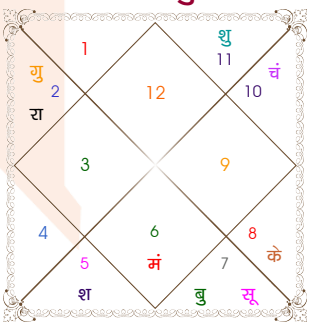

सर्वाष्टकवर्ग

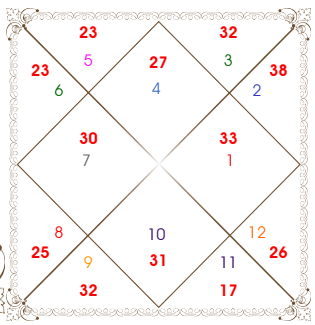

दशमांश कुंडली

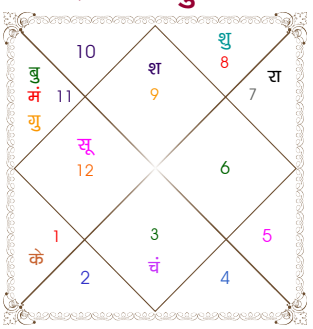

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com

नक्षत्रफल

आप रेवती नक्षत्र के द्वितीय चरण में पैदा हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि मीन तथा राशिस्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण ब्राहमण, गण देव, योनि गज, नाड़ी अन्त्य तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के द्वितीय चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "दो" या "दौ" अक्षर से होगा। यथा- दौलत सिंह आदि

आप में स्वाभाविक रूप से सज्जनता का भाव विद्यमान रहेगा एवं समाज में दूसरे लोगों से आपके प्रिय एवं मधुर संबंध रहेंगे। धन वैभव आदि से आप हमेशा युक्त रहेंगे एवं सुख पूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगे। इन्द्रियों पर आप पूर्ण नियंत्रण रखने में सक्षम रहेंगे तथा संयमपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। आप नैसर्गिक रूप से ईमानदार रहेंगे एवं अपने इसी गुण से व्यापारादि में धनार्जन करेंगे तथा किसी भी अनैतिक कार्य से धन लाभ प्राप्त नहीं करना चाहेंगे। इसके अतिरिक्त आप कुशाग्र बुद्धि के पुरूष होंगे एवं बुद्धिमता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

चारूशीलविभवो जितेन्द्रियः सद्धनानुभवनैकमानसः।
मानवो ननु भवेन्महामती रेवती भवति यस्य जन्मभम्।।
जातकाभरणम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सुन्दर स्वभाव वाला, ऐश्वर्य युक्त, जितेन्द्रिय, नेक नीयत से द्रव्य लाभ करने वाला तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है।

आप शरीर के सुन्दर सर्वाङ्गों से परिपूर्ण रहेंगे। आप समाज में सभी वर्गो के मध्य प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप शौर्य गुणों से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं पराक्रमी तथा साहसिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगे। आपके इस साहसी स्वभाव से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप मन से स्वच्छ रहेंगे एवं सबके साथ विश्वास पूर्वक कार्य सम्पन्न करेंगे तथा धोखा किसी के भी साथ नहीं करेंगे। इसके अतिरिक्त धन सम्पति से सुशोभित रहकर समाज में आप एक धनवान पुरूष के रूप में भी यशार्जन करने में सफल रहेंगे।

सम्पूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचिरर्थवान्पौष्णे।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला जातक शारीरिक अंगो से पूर्ण सम्पन्न, सर्वसमाजप्रिय, रणप्रिय, हृदय से शुद्ध एवं धन से सुसम्पन्न होता है।

आपके सभी कार्य कुशलता पूर्वक सम्पन्न होंगे एवं अन्य सामाजिक जनों से आपका व्यवहार अत्यन्त ही सुशील एवं प्रशंसनीय रहेगा। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा नाना प्रकार के शास्त्रों का परिश्रम पूर्वक विस्तृत ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम रहेंगे। इससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में नित्य वृद्धि होती रहेगी। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य से भी आप

सुशोभित रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन यापन करेंगे।

सम्पूर्णाङ्गः शुचिर्दक्षः साधुः शूरो विचक्षणः।
रेवती सम्भवे लोके धनधान्यैरलंकृतः।।
मानसागरी

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न जातक सब अंगों से पूर्ण, पवित्र, कार्यों में दक्ष, साधु, शूरवीर, पंडित एवं धन धान्यों से सर्वथा अलंकृत रहता है।

काम भावना की प्रवलता से आप यदा कदा व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे। साथ ही आपके जानुभाग में कोई निशान या चिन्ह भी हो सकता हैं। आप देखने में सुन्दर होंगे तथा सलाह या मंत्रणा आदि के कार्यों में दक्ष रहेंगे। आप सुशील पत्नी एवं गुणवान पुत्रों से युक्त रहेंगे एवं आपके सभी मित्र भी शिक्षित एवं सद्गुणों से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। आप दृढ विचारों के व्यक्ति होंगे तथा सभी आवश्यक कार्यों को दृढता से सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त स्थिर धन सम्पति से आप सुशोभित रहेंगे एवं प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

रेवत्या मुरूलांच्छनोपगतनुः कामातुरः सुन्दरो।
मंत्री पुत्रकलत्रमित्रसहितो जातः स्थिरः श्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् रेवती नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य जाघों में चिन्ह वाला, कामातुर, सुन्दर, मंत्री या सलाह देने वाला, दृढ़, श्रीयुत, स्त्री, पुत्र तथा मित्रों से युक्त होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में स्त्री एवं पुत्रोंसहित धन धान्य से सर्वदा सम्पूर्ण रहेंगे। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने में भी आपकी पूर्ण निष्ठा रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित होगे तथा तीर्थ यात्राओं के प्रति भी आपकी श्रद्धा तथा रूचि रहेगी। जीवन में आप समस्त भौतिक संसाधनों एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगे। साथ ही काव्य शास्त्र में भी आपकी रूचि रहेगी एवं इसके अध्ययन में भी आप तत्पर रहेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुशोभित रहेंगे। आप के सभी कार्य प्रारम्भिक अवस्था में ही सिद्ध हो जाएंगे। बन्धुजनों से आपके मधुर एवं स्नेह पूर्ण संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपका भाग्य भी उत्तम रहेगा एवं अनुकूल समय पर उदय होगा। धार्मिक तथा पितृ आदि कार्यों के प्रति भी आप निष्ठावान रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न पुत्रों से सर्वदा युक्त रहेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

मीन राशि में उत्पन्न होने के कारण आप सुन्दर आकर्षक शरीर एवं व्यक्तित्व से युक्त रहेंगे। आपका ललाट विस्तृत एवं नासिका उन्नत होगी। साथ ही आप की कमर भी पतली होगी। शिल्प एवं चित्रकारी में आप निपुण होंगे एवं परिश्रम पूर्वक इस क्षेत्र में सफलता तथा यशार्जन करने में सफल हो सकेंगे। आप शत्रुओं को पराजित करने में सक्षम होगे तथा वे भी आपसे सर्वदा भयभीत एवं प्रभावित रहेंगे। साथ ही वे आपका विरोध करने में हमेशा असमर्थ

रहेंगे। आपको विभिन्न शास्त्रों का भी ज्ञान होगा एवं एक विद्वान के रूप में समाज में सम्मान प्राप्त करेंगे। गीत शास्त्र के प्रति भी आप रूचिशील रहेंगे एवं यत्नपूर्वक इसका भी ज्ञान करने में आप उत्सुक रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं निष्ठा का भाव रहेगा एवं नियम पूर्वक आप धर्माचरण में प्रायः तत्पर रहेंगे स्त्री वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा कई लोगों से आपके मधुर एवं मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे। आप हमेशा मधुर एवं प्रियवाणी का उपयोग करेंगे जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही जीवन में आवश्यक भौतिक सुखसंसाधनो की भी आपको प्राप्ति होगी जिसका आप उपभोग करने में प्रसन्नता की अनुभूति प्राप्त करेंगे। आप में क्रोध के भाव की अल्पता भी रहेगी एवं राजकीय सेवा में भी आप नियुक्त रहेंगे। आप जमीन के अन्दर से निकाले गए पदार्थो से विशेष रूप से लाभ भी अर्जित करेंगे। स्त्री के आप पूर्ण रूप से नियंत्रण में रहेंगे तथा सभी आवश्यक कार्यों को उसके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आपका स्वभाव अच्छा रहेगा तथा सभी सामाजिक लोगों से आपके मधुर संबंध रहेंगे। इसके अतिरिक्त समुद्री जहाज में यात्रा करने या नाव आदि में सैर करने में भी आप की प्रवृति रहेगी एवं इससे आपको प्रसन्नानुभूति प्राप्त होगी। साथ ही दानशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में यथाशक्ति इसका अनुपालन करते रहेंगे।

शिल्पोत्पन्नाधिकरोळहितजयनिपुणः शास्त्रविच्चारुदेहो।
गेयज्ञो धर्मनिष्ठो बहुयुवतिरतः सौख्यभाक् भूपसेवी।।
ईष्टत्कोपो महत्कः सुखनिधिधनभाक् स्त्रीजितः सत्स्वभावो।
यानासक्तः समुद्रे तिमियुगलगते शीतगौ दानशीलः।।
सारावली

आपको जल या समुद्र से उत्पन्न पदार्थो तथा मोती शंखादि रत्नों से विशेष लाभ प्राप्त होगा तथा इनसे आप युक्त भी हो सकते हैं। साथ ही जीवन में किसी अन्य व्यक्ति संबंधी या मित्र की धन सम्पति भी आपको प्राप्त हो सकेगी तथा सुख पूर्वक आप उसका उपभोग कर सकेंगे। स्त्रियोचित परिधानों के प्रति आपके मन में विशेष आकर्षण रहेगा। इसके साथ ही आप शारीरिक रूप से मध्यम कद के पुरूष होंगे।

जलपरधनभोक्ता दारवासोळनुरक्तः।
समरूचिरशरीरस्तुङ्गनासो बृहत्कः।।
अभिभवति सपत्नान् स्त्रीजितश्चारुदृष्टिः।
द्युतिनिधि धनभोगी पंडितश्चान्त्यराशौ।।
बृहज्जातकम्

आप दिन में कई बार जल पीने की इच्छा प्रकट करेंगे तथा जल को अधिक मात्रा में उपयोग करेंगे। आपका अपनी पत्नी के ऊपर पूर्ण विश्वास रहेगा तथा उससे हमेशा प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। अतः आपका सांसारिक जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। आप में विद्धता के गुण भी रहेंगे एवं कृतज्ञता के भाव से भी सर्वथा युक्त रहेंगे तथा अन्य मनुष्यों के द्वारा उपकृत होने पर उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करेंगे। इसके साथ ही आप भाग्यबल

से युक्त पुरूष होंगे तथा आपके अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य भाग्यबल से ही सिद्ध होंगे।

अत्यम्बुपानः समचारूदेहः स्वदारगस्तोयजवित्तभोक्ता।
विद्वान्कृतज्ञो ळमिभवत्यळमित्रान् शुभेक्षणो भाग्ययुतोळन्त्यराशौ।।
फलदीपिका

आप एक संयमी पुरूष होंगे एवं इन्द्रियों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण रखकर जीवन व्यतीत करेंगे इससे आपके लिए अनावश्यक परेशानियां अल्प मात्रा में ही उत्पन्न होंगी। आप के अधिकांश कार्य चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे तथा सभी लोग आपके इस गुण से प्रभावित रहेंगे। जल क्रीड़ा करने में आप अत्यन्त ही आनन्दानुभूति प्राप्त करेंगे तथा इसके लिए नित्य प्रयत्नशील भी रहेंगे। आप का मन सर्वदा शुद्ध रहेगा अतः अन्य लोगों से आप कभी भी धोखा नहीं करेंगे तथा शुद्ध मन से अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

शशिनि मीनगते विजितेन्द्रियो बहुगुणः कुशलो जललालसः।
विमलधीः किल शस्त्रकलादरस्त्व बलताबलताकलितो नरः।।
जातकाभरणम्

जीवन में आप सामान्यतया उदर पोषण आदि के कार्यों में ही अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। साथ ही यदा कदा लाभमार्ग भी अवरूद्ध होगे। इससे आपको आर्थिक परेशानियों का सामना भी करना पड़ेगा। शारीरिक कान्ति से आप सुशोभित रहेंगे एवं इससे आपके सौन्दर्य आकर्षण में निरन्तर वृद्धि होगी। पिता से आप पूर्ण रूपेण धन सम्पति प्राप्त करेंगे तथा जीवन में सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगे। आप साहसी एवं पराक्रमी व्यक्ति भी होंगे तथा साहसिक एवं शौर्योचित कार्यों को करने में नित्य तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप सन्तोषी स्वभाव के व्यक्ति होंगे एवं जो कुछ भी उपलब्ध हो उसी में सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे।

जलचरधनभोक्ता मोहयुक्तोळप्रशस्तः।
उदरभरणदेहस्तुङ्गमांसो डध्यः।।
अभिलषति सपत्नी स्त्रीजितश्च चारूकान्तिः।
पितृधनजनभोगी पीडितो मीनराशिः।
तुष्टः साहसी क्रोधयुक्तः मीनराशिर्मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप में गम्भीरता का भाव नित्य विद्यमान रहेगा तथा वीरता के गुणों से भी आप युक्त रहेंगे। समाज में आप एक गणमान्य तथा प्रधान पुरूष के रूप में श्रद्धेय तथा सम्माननीय समझे जाएंगे। साथ ही आपका स्वभाव कृपणता से भी युक्त रहेगा एवं धन संचय के प्रति आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप परिवार तथा कुल में भी प्रिय तथा श्रेष्ठ रहेंगे तथा सभी परिवारिक जनों से यथा योग्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। सेवा कार्यों में भी आप तत्पर रहेंगे एवं इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी। आप शीघ्र गति से गमन करना पसन्द करेंगे। शनैः शनैः चलना आपको उचित नही लगेगा। इसके अतिरिक्त आप उत्तम आचरण के व्यक्ति होंगे तथा आपका आचरण अन्य लोगों के लिए प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय रहेगा। इसके

साण ही बन्धु जनों के मध्य आप अत्यन्त ही प्रिय रहेंगे।

गम्भीरचेष्टितः शूरः पटुवाक्यो नरोत्तमः।
कोपनः कृपणो ज्ञानी गुणश्रेष्ठः कुल प्रियः।।
नित्यसेवी शीघ्रगामी गाधंर्वकुशलः शुभः।।
मीन राशौ समुत्पन्नौ जायते बन्धुवत्सलः।।
मानसागरी

इस प्रकार अपने आकर्षक सौन्दर्य एवं विद्वता से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा समाज में पूर्ण आदर तथा सम्मान अर्जित करेंगे।

मीनस्थे मृगलाञ्छने वरतनुर्विद्वान बहुस्त्रीपतिः।।
जातक परिजातः

देवगण में पैदा होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं श्रेष्ठ रहेगी जिससे अन्य लोग आपसे नित्य प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आप की बुद्धि सरल रहेगी तथा सब कुछ सादगी से ग्रहण करने की क्षमता से आप सुशोभित रहेंगे। आप थोड़ी मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करने में रूचिशील रहेंगे एवं इसको प्राप्त करके आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे। अन्य लोगों के गुणों का आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा अच्छे बुरे की पहचान करने में नित्य समर्थ रहेंगे तथा स्वयं भी उत्तम विद्वानों द्वारा प्रतिपादित श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न रहेंगे। इसके अतिरिक्त जीवन में सर्वप्रकार के धन ऐश्वर्य एवं वैभव की आपकी पास प्रधानता रहेगी तथा प्रसन्नतापूर्वक आप जीवन व्यतीत करेंगे।

आप देखने में सुन्दर होंगे तथा दानशीलता की भावना से सर्वथा सुशोभित रहेंगे। साथ ही आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करने में नित्य रूचिशील रहेंगे। आप अनावश्यक भौतिकता तथा दिखावे के भी विरूद्ध रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक उच्च कोटि के विद्वान होंगे एवं समाज में एक विद्वान के रूप में आपकी पूर्ण प्रतिष्ठा तथा ख्याति रहेगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

गज योनि में जन्म होने के कारण आप उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग के सदैव प्रिय रहेंगे एवं इनसे पूर्ण सहयोग तथा आदर भी प्राप्त करेंगे। इससे आपके अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य सुगमता पूर्वक सिद्ध हो जाएंगे। साथ ही शारीरिक बल से भी आप युक्त रहेंगे तथा अपने अधिकांश कार्यों को स्वभुजबल से ही सम्पन्न करेंगे। जीवन में विविध प्रकार के भौतिक सुखों

को प्राप्त करने में भी आप सौभाग्यशाली रहेंगे। जीवन में आप किसी उच्चाधिकारी के सहयोगी या स्वयं भी उच्चाधिकारी बन सकते हैं। आप एक उत्साही पुरूष होंगे एवं उत्साह पूर्वक कार्य करने से सामान्यतया सफलता प्राप्त करने में सफल रहेंगे एवं आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

आपके लिए फाल्गुन मास, पंचमी, दशमी तथा पूर्णमासी तिथियां, आश्लेषा नक्षत्र, वज्रयोग, विष्टिकरण, शुक्रवार, चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 फरवरी से 14 मार्च के मध्य 5,10,15 तिथियों, आश्लेषा नक्षत्र, व्रजयोग तथा विष्टि करण में कोई भी शुभ कार्य सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार चतुर्थ प्रहर तथा कुम्भ राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें। इसके साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य शुभ कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी जगदम्बा की उपासना करनी चाहिए तथा नियमित रूप से वृहस्पतिवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, पीत पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन हल्दी तथा चने की दाल आदि पदार्थो का किसी योग्य पात्र को श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए। इससे आपकी चिन्ताएं दूर होगी तथा समस्त अशुभ फल दूर होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी एवं सर्वत्र लाभमार्ग प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी सुयोग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

SHASTRI DEEPANSHU SHARMA
JAY MAA JYOTISH KENDRA HATKOTI
TEH - JUBBAL SHIMLA HIMACHAL PRADESH - 171206
Mob-9418272812
deepanshusharma239139@gmail.com